

कार्यशाला रिपोर्ट

योग्यता आधारित शिक्षा

शनिवार - 6 फरवरी 2021

दिल्ली पब्लिक स्कूल, सेक्टर 45

समय- 10-10:45 सुबह

माइक्रोसॉफ्ट टीम्स

योग्यता आधारित शिक्षा हिंदी विषय में किस तरह कार्यान्वित की जा सकती है इस विषय पर मीरा खुराना द्वारा एक कार्यशाला आयोजित की गई।

कार्यशाला में हिंदी विभाग की मेंटर निशी धंजल, विभागाध्यक्षा आशा शर्मा और मिडिल स्कूल के हिंदी विभाग के अध्यापकों (शशि मिश्रा, अनीता सिंह, वाणी शर्मा, लवली मान, प्रीति सहगल, मीना अरोड़ा, संगीता शर्मा, रंजु कुमारी, दर्शना धवन) दीप्ति तुली (प्राइमरी) द्वारा भाग लिया गया।

कार्यशाला के मुख्य बिंदु

सर्वप्रथम योग्यता आधारित शिक्षा को परिभाषित किया गया। बदलते परिवेश में उसकी आवश्यकता पर बल दिया गया। उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई। परंपरागत शिक्षण पद्धति और योग्यता आधारित शिक्षण पद्धति में अंतर बताया गया। योग्यता आधारित शिक्षा में किस तरह विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से हम कक्षा को रोचक बना सकते हैं इस बात पर बल देते हुए कार्यशाला के दौरान गतिविधियां (कविता बनाएँ, वाद-विवाद मुहावरों का प्रयोग) करवाई गईं। अपने विषय को दूसरे विषयों के साथ किस तरह जोड़ा जा सकता है और छात्रों के ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है यह भी बताया गया। चर्चा के लिए, लिए गए पाठ (टोपी) से ज्ञानार्जन अधिगम पर चर्चा करते हुए कार्यशाला को समाप्त किया गया।

https://dpsgurgaon.sharepoint.com/:v:/s/HINDITEAMMIDDLESCHOOL/ERst4oLEDatDj0jeSBVvs5wB8qrxrg5vR6tH3SHzmHI7Z_w?e=GzTa1c

योग्यता आधारित शिक्षा

- छात्र केंद्रित पद्धति है।
- छात्र इससे आपसी सहयोग में समर्थ।
- स्वयं को अलग-अलग स्थितियों में ढाल पाने में समर्थ।
- हर छात्र की क्षमता पर केंद्रित।
- आत्मनिर्भरता का भाव।
- आलोचनात्मक सोच के लिए प्रेरित।
- स्वयं और दूसरों के लिए प्रेरणादायक।

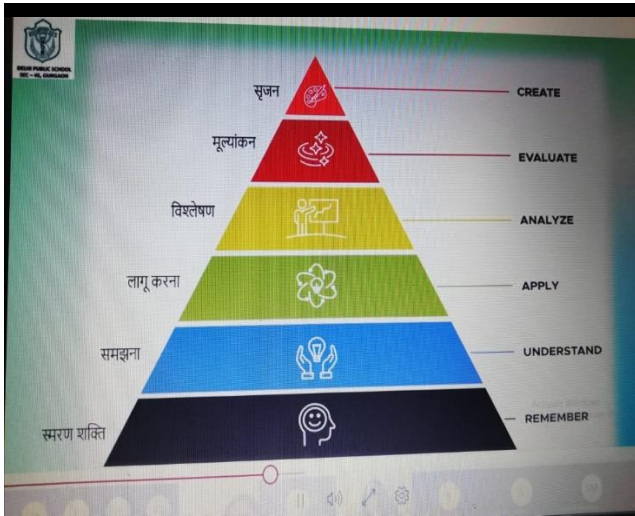


जहाँ चाह वहाँ राह

गतिविधि-1

कविता पूरी कीजिए-

जीवन में कुछ करना चाहता हूँ
मैं भी कुछ बनना चाहता हूँ
पर रास्ता कुछ कठिन है





वाद-विवाद

गतिविधि-2

ऐसे कज है जिसके मायाम से हम किसी भी विषय के पक्ष व विपक्ष को समाने सकते हैं।
इस तरह विषय बहुत ही कठिनी से समझ आ जाय है।

“राजतंत्र ही उचित विकल्प है।”
पक्ष या विपक्ष में अपने विचार रखें।




टोपी

- टोपी पाठ एक व्यंग्य है जिसमें गवरा और गवरइया बहुत ही खबसूरती से यह दर्शाते हैं कि जीवन में उत्साह होने पर कोई भी कार्य सिद्ध हो जाता है।
- मनुष्य के मन में कुछ पाने की चाहत यदि प्रबल हो तो कठिनाइयों में भी रास्ता निकाल लेती हैं।
- किस तरह राजा अपनी चाटुकारिता और राजतंत्र के कारण प्रजा की दुर्गति का कारण बनता है। व्यंग्यात्मक रूप में लेखक ने पाठकों तक यही संदेश देना चाहा है।

